शोध पत्र

lkekT; dk fojk/kh Hkko g Lojkt tk ufrd g

* Mk- Hkkouk flg Hknkfj;k

* जीवाजी विश्व विद्यालय, ग्वालियर

दोनों ही शब्द अर्थशोध में व्यापकता संजोए हुए है जबकि सामान्य रूप में साम्राज्यवाद विदेशियों द्वारा विश्व में अपना आधिपत्य और अधिकार क्षेत्र का बोध कराता है वहीं स्वराज्य इसका विरोधी भाव प्रदर्शित करता है। हाल ही में ब्रिटेन का विश्व में साम्राज्यवाद और अब उसका प्रायः अन्त तथा उसका स्थान स्वराज के रूप में स्थानीय शक्तियों ने ले लिया है।

इतिहास के मध्ययुग में शक्तिशाली देशों ने पराजय के द्वारा अथवा व्यापार के माध्यम से कुटिलता पूर्वक स्थानीय अज्ञनता का लाभ उठाते हुए संघर्ष और प्रलोभन के द्वारा अपना आधिपत्य स्थापित किया। परन्तु द्वितीय महायुद्ध के बाद यह स्थिति धीरे–धीरे राजनीतिक आन्दोलनों द्वारा बदलती गई और अब साम्राज्यवाद विश्व मे अंतिम साँसे ले रहा है यद्पि कहीं–कहीं राजतंत्र जीवित है।

वर्तमान युग में राजनीतिक जागरण के साथ ही स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीयता जैसे शब्दों का उद्य हुआ। जिसे स्वाधीनता संघर्ष कहा गया। उद्देश्य स्वराज की स्थापना रहा। इस प्रकार साम्राज्यवाद और स्वराज एक–दूसरे के विरोधी भाव है। अपने ही देश भारत के अतीत को देखें, तो प्रारम्भ में विदेशी आक्रामक एक हाथ में तलवार और दूसरे में धर्म को लेकर आए, प्रारम्भ में सिंध प्रदेश को अधिकृत करने के बाद अधिक समय तक आगे न बढ़ सके और पुनः बारूद के अस्त्रों से देश को पराजित किया, और साम्राज्यवाद का प्रारम्भ हुआ, शक्ति–सम्पन्न होते गए, यहीं के धन से सेनाएं स्थानीय लोंगों की बनाई और पूरें देश पर शासन करने लगें, यह भी एक प्रकार से साम्राज्यवाद ही था।

परन्तु वे छोटे राज्यों को जीतकर उन पर राज करना था, अकबर के शासन काल में यह व्यवस्था चरम उत्कर्ष पर थी तभी स्वराज्य का संधर्ष भी प्रारम्भ हो गया था, परन्तु कूटनीति और भेदनीति के द्वारा विरोधियों का दमन करते हुए केन्द्रीय सत्ताओं का उदय हुआ। कई अर्थो में यह ब्रिटिश–कालीन साम्राज्यवाद से भिन्न था, परन्तु राज्य का विस्तार सम्राज्यवाद कहा जाने लगा था।

उद्देश्य धर्म परिवर्तन और दमन का शोषण तो था, परन्तु दूसरी और राजतंत्र था ब्रिटिश राजकाल मे यह दूसरा रूप था। राजा सातसमुन्दर पार रहकर सेवको के द्वारा शासन करता था, मुख्य उद्देश्य धर्मपरिवर्तन न होकर आर्थिक और राजनीतिक था।

इस मध्ययुगीन साम्राज्यवाद के प्रतिक्रियास्वरूप 'पराधीनता', 'स्वाधीनता' और 'स्वराज्य' जैसे शब्द तो अस्तीत्व में आ चुके थे परन्तु 'राष्ट्रीयता' जैसे शब्दों का उद्भव न हुआ था। ''पराधीन सपनेह सुःख नाही'' जैसी अनुभूति तुलसी द्वारा की जा चुकी थी। राणा प्रताप द्वारा जीवन भर अकबर के साम्राज्यवाद के विरोध में संघर्ष किया जा चुका था परन्तु राष्ट्रीयता शब्द का उदय न हुआ था जो वर्तमान युग की देन है। राणाप्रताप मे वे शब्द मानसिंह के लिये कि –''परसाम्राज्यवाद संग में वह अकबर का ले आया है इसमे मैने महाप्रलय का सन्देश दोहराया है।'' अकबर के द्वारा साम्राज्यवाद के विस्तार की भावना की ओर विद्रोह का स्वर था, जिसनें पराधीनता के विरोध में स्वीधनता जैसे शब्द को जन्म दिया और शोषण के विरोध में प्रजापालन के लिये 'सुराज' शब्द अस्तीत्व में आया जो स्वराज्य से थोड़ा भिन्न था परन्तु जातीयता और वर्गभेद की प्रबलता के युग में सांस्कृतिक एकता के अभाव में राष्ट्रीयता चेतना ने जन्म लिया था। तत्कालीन काव्य के स्वरों में अवश्य दबे रूप में यह चेतना जीवित रही, जो तुलसी के बाद में महाकवि भूषण कें स्वर में मुखर हुई।

''शिवा को सहारो या सराहो क्षत्रसाल को'' धर्म के विरोध में स्वर मुखरित हुए और गुरूओं की क्षत्रछाया में एक अलग हिन्दू भावना शिष्यों के रूप में प्रकट हुई जो बाद में सिख धर्म के रूप में परिणित हुआ। गुरूगोंविन्द के द्वारा जिस चेतना को जन्म दिया गया वह महाराष्ट्र की स्थापना शिवाजी द्वारा की जाने के बाद 'राष्ट्र' शब्द बार–बार सुनाई दिया, इधर बुन्देलों ने मधुकरशाह, क्षत्रशाल और वीरसिंह बुन्देला की रणनीति के द्वारा प्रायः पूरे मुगलकाल में स्वाधीनता का सुःखभोग किया, और पराधीन नहीं हुए।

यह तीनों ही स्वर साम्राज्यवाद और धर्मान्धता के प्रतिक्रियास्वरूप ही थे जिन्होने मुगलों की सत्ता की चूलें हिला दी, और देश के बड़े भू–भाग को स्वाधीन कर लिया।

आदिगुरू शंकराचार्य ने जिस धार्मिक चेतना को प्रारम्भ किया था, वह दक्षिणी भारत के धार्मिक आन्दोलनों के रूप में सत्त उत्तर की ओर प्रवाहमान तो रही, परन्तु साम्राज्यवाद का विरोध न कर सकी जनता को धार्मिक एकता मे तो बांधे रही, परन्तु जाग्रत न कर सकी, निराशा में सुप्तावस्था की थपकी तो देंती रही। स्वामी विवेकानन्द ने देश मे जागरण को मंत्र फूंका। युवकों को जाग्रत और उठने का संकेत किया, वेतान्द

को नऐ स्वर दियें, भारत माता के रूप ईश्वर की पूजा की जिससे रा ट्रीय भावना का उदय हुआ। अंग्रेजी शासन काल में इसे साम्राज्यवाद के उखाड़ने के प्रथम प्रयास कहा जाऐगा, क्योंकि सन् 1857 को 'प्रखर विद्रोह' और 'गदर' कहकर कूटनीति के द्वारा दमन कर दिया गया था, बाद में सुधार के नाम परें दमनकारी कानून लाकर 90 साल तक और शासन बनाए रखा गया।

''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और में इसे लेकर ही रहूगाँ'' महाराष्ट्र केसरी लोकमान्य तिलक की यह अनुगुंज बाद में राष्ट्रीयता का स्वर बन गई जो अनेक 'देशभक्तों' के द्वारा कार्यरूप आन्दोलन में परिणित हुई। और स्वराज्य के साथ भारत में साम्राज्यवादी शासन का अन्त हूआ।

भारत साम्राज्यवादी शासन का सबसे बड़ा शासित प्रदेंश था, इसका प्रभाव विश्व के अन्य छोटे शासित प्रदेशों पर भी पड़ा और एक के बाद अनेक शासित राज्यों ने राष्ट्रीय आन्दोलनो के द्वारा 'स्वराज्य' के लिये संघर्ष तेज होते गए।

साम्राज्वाद का अंत तो हुआ। परन्तु इसका रूप बदल गया। शासित प्रदेशों को आजादी तो दी परन्तु अपने हित सुरक्षित रखने की कूटनीति का जाल भी बिछाते गए। सेवाओं की कमी के लिये 'नाटो' (NATO) जैसे संगठन बनाकर कमजोर राष्ट्रों को अपने हित में प्रयोग करते गए। आर्थिक हितों को बनाए रखने के लिये 'कॉमन मार्केट' जैसे संगठन बनाए जो आज विश्व में अशांति व भय का कारण बने हुए है, यह साम्राज्यवाद की नवीन परिणिति है।

सूक्ष्म वैचारिक दृष्टि से साम्राज्यवाद एक शक्तिशाली राष्ट्र की महत्वकांक्षा का सूक्ष्म भावनात्मक रूप है जो स्वार्थपूर्ति के लिये रूप बदलता है देशकाल की परिस्थिति के अनुसार अपने हितों के हेंतु अन्य छोटे राज्यों का सब प्रकार का शोषण इसका मूलमंत्र है।

वर्तमान यूग सब प्रकार से जागरण का युग था। दो विश्वयुद्धों के बाद साम्राज्यवादी शक्तियँा आर्थिक दृष्टि से कमजोर हुई, तो दूसरी और जो सेनाएँ विदेश जाकर लौटी, उससे उनमें भी नया जागरण हुआ, आजाद हिन्द सेना का प्रभाव भारतीय सैनिकों पर पड़ा, बम्बई में नेवी (Navy) ने विद्रोह कर दिया, इस प्रकार से भयभीत शक्तियाँ निर्जीव हो गई और उन्हें देश को छोड़कर जाना पड़ा। भारत के बाद अन्य देश भी स्वाधीन होते गए, और साम्राज्यवाद इतिहास की वस्तु बनकर रह गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्राचीन भारत का इतिहास – रीता ार्मा।
2. भारतीय सांमतवाद – रामशरण ार्मा।
3. मुगलकालीन भारत – एल.पी. माथुर एवं जी.एन. माथुर
4. भारत का स्वतन्त्रता संघ ार्ा – विपिन चन्द्र
5. मुगलशासन प्रणाली – डॉ. हरिशंकर श्रीवास्वत